अमृत वाणी

खुशी केवल उन्हीं व्यक्तियों को प्राप्त होती है जो कि दूसरों को खुश करने के लिए प्रयासरत रहते है।

- अज्ञात

सतर्कता के साथ संयम भी जरुरी

कोरोना वायरस की वर्तमान विशाल चुनौति की घड़ी में निस्संदेह सतर्कता और सावधानी ही एकमात्र उपाय है जिससे हम सफलतापूर्वक हालात का सामना कर सकते हैं लेकिन जिस तरह हर संकट में संयम एक बड़ा अस्त्र होता है उसी तरह आज के इस संक्रमण काल में भी संयम बरतने की बहुत अधिक आवश्यकता है। आम लोगों से लेकर प्रशासन और विशेष रुप से पुलिस कर्मचारियों को इसकी सर्वाधिक जरुरत है।

आम लोगों को यह समझना होगा कि भले ही प्रशासन नियम तोड़ने पर कड़ी कार्यवाही की चेतावनी दे रहा है मगर बार बार यह समझाने का प्रयास भी कर रहा है कि जो सारे रोक टोक लगाए जा रहे हैं वे सब कुछ उनकी जीवन रक्षा के लिए ही एहतियाती कदम हैं। अतः नियमों को मानकर चलना उनके स्वयं के हित में है।

यह अवश्य है कि लोगों की दैनन्दिन जरुरतें एक दिन में पूरी कर पाना मुश्किल है परंतु यह भी समझने की जरुरत है कि हालात की संवेदनशीलता को भांपकर यथासंभव समायोजना करना ही होगा। जहां तक घर से बाहर निकलने की बात है अगर नियमानुकूल किया जाय तो असंभव नही है। शासन बार बार जरुरत के सामानों की उपलब्धता का आश्वासन दे रही है। उस पर भरोसा करके अगर हर कदम सोच समझकर संयम के साथ उठाएं तो न कोई परेशानी होगी और न विवाद।

जहां तक प्रशासन का मामला है इसमें कोई दो राय नही कि उसके बनाए नियम और व्यवस्था समय की अनिवार्यता है मगर उसे उनके क्रियान्वयन के तौर तरीकों और व्यवहाकिता पर भी उतनी ही पैनी नजर रखनी होगी ताकि कही भी किसी भी स्तर पर लापरवाही या उदासीनता न हो क्योंकि इससे आम लोगों का भरोसा डगमगाना नामुमकिन नही है।

उदाहरण के लिए विदेश के साथ साथ अन्य संक्रमित प्रदेशों से लौटने वालों को भी स्वयं की जांच कराने स्वास्थ्य विभाग से संपर्क करना जरुरी है लेकिन वास्तविकता यह है कि कई बार आम लोगों को विभाग से अपेक्षित सहयोग नही मिलता। इसके लिए भी प्रभावशील लोगों या शीर्ष अधिकारियों के हस्तक्षेप की जरुरत पड़ती है।

अंत में अगर हम पुलिस कर्मियों व्दारा निभाई जा रही ड्यूटी पर नजर डालें तो इस बात की सराहना अवश्य करनी होगी कि दिन रात वर्तमान संक्रमणकाल में भी वे अपना कर्तव्य निभा रहे हैं लेकिन दूसरी ओर चारों ओर से उनके व्दारा लोगों के साथ ज्यादती करने की जो शिकायतें मिल रही है वह सर्वथा दुखद और निंदनीय है। लोगों को नियम विरुध्द जाने से रोकना पुलिस का दायित्व भी है और कर्तव्य भी लेकिन इसके लिए लाठी बरसाने की न तो जरुरत है और न यह उनका अधिकार है। लोगों से उनके घर से निकलने का कारण बिना पूछे और न उनकी समस्या जाने किसी पर भी लाठी चला देना पुलिस की छबि को धूमिल कर रही है।

सबसे दुख की बात है कि जहां केन्द्र और राज्य सरकार ने प्रशासन को यह स्पष्ट निर्देश दे रखा है कि मीडिया से हर प्रकार से सहयोग किया जाय, वही पुलिस मीडिया कर्मियों पर भी मनमाना लाठी बरसा रही है। यहां तक कि उन्हें अपना परिचय पत्र दिखाने तक का वक्त नही देती। यह सरासर गलत और शर्मनाक है। शासन का न ऐसा आदेश है और न कानूनन पुलिस को ऐसा अधिकार है।

इसलिए इस संवेदनशील घड़ी में पुलिस को भी पूरे संयम के साथ काम करने की जरुरत है। ध्यान रखना जरुरी है कि प्रशासन और आम जनता के सहयोगात्मक सतर्कता सावधानी और संयम से ही वर्तमान चुनौति पर विजय संभव है।

राजकाज

साइबर का खतरा

भारत में इस तरह के साइबर हमले लगातार बढ़ रहे हैं। एक आंकड़ा तो एडवर्ड स्नोडेन ने ही मुहैया कराया था। मार्च 2013 में स्नोडेन ने बताया था कि बाहर बैठे सेंधमारों ने भारतीयों की ९ण्३ अरब खुफ़िया सूचनाओं तक पहुंच बना ली थी। हालत यह है कि हमारे प्रधानमंत्री कार्यालय से लेकर रक्षा व विदेश मंत्रालयए भारतीय दूतावासोंए मिसाइल प्रणालियोंए एनआइसीए यहां तक खुफ़िया एजेंसी.सीबीआई के कंप्यूटरों पर भी साइबर हमले कर जासूसी हो चुकी है। साइबर स्पेस के खतरों की बात अब काल्पनिक नहीं है।

मां ब्रह्मचारिणी की पूजा से सुख और आरोग्य की प्राप्ति

मां ब्रह्मचारिणी को संयम की देवी भी कहा जाता है। माना जाता है कि देवी के इस रूप की पूजा करने से मनुष्य में तप, त्याग, वैराग्य, सदाचार, संयम की प्राप्ति होती है।

देवी ब्रह्मचारिणी की उपासना से मनुष्य में तप, त्याग, वैराग्य, सदाचार, संयम की वृद्धि होती है। मां दुर्गा का यह स्वरूप उस कन्या का है जो महादेव शंकर भगवान को अपने पति के तौर पर प्राप्त करने के लिए कठोर तप करती है। पूर्वजन्म में मां ब्रह्मचारिणी ने नारदजी की सलाह से भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तप किया था। इनके कठोर तप के कारण ही इनका नाम ब्रह्मचारिणी पड़ा। हजार वर्ष तक इन्होंने केवल फल-फूल खाए और सौ वर्ष तक जमीन पर रहकर शाक पर जीवनयापन किया। कठोर तप के कारण ही इस माता का नाम ब्रह्मचारिणी है। मां ब्रह्मचारिणी की विधि विधान से पूजा करने पर सदैव विजय प्राप्त होती है। मां ब्रह्मचारिणी सरल स्वभाव वाली और दुष्टों को सद मार्ग दिखाने वाली हैं। इनके दाहिने हाथ में जप की माला व बाएं हाथ में कमंडल है। श्रद्धालु यदि भगवती के इस स्वरूप की आराधना करता है तो उसमें तप करने की शक्ति, त्याग, सदाचार, संयम और वैराग्य में वृद्धि होती है। जीवन के कठिन से कठिन संघर्ष में वह विचलित नहीं होता है। मां

नवरात्रि शुरू हो चुकी है। नवरात्रि के नौ दिनों में हर दिन माता के अलग रूप की पूजा होती है। हर दिन की माता अलग होती है और उसकी पूजा का महत्व भी। नवरात्रि के दूसरे दिन 26 मार्च गुरुवार को मां दुर्गा के ब्रह्मचारिणी स्वरूप की पूजा की जाती है। ब्रह्म का मतलब होता है तपस्या और चारिणी मतलब होता है आचरण करना।

भगवती को नवरात्र के दूसरे दिन चीनी का भोग लगाना चाहिए मां को शक्कर का भोग प्रिय है। ब्राह्मण को दान में भी चीनी ही देनी चाहिए। मान्यता है कि ऐसा करने से मनुष्य दीर्घायु होता है। इनकी उपासना करने से मनुष्य में तप, त्याग, सदाचार आदि की वृद्धि होती है।

नवरात्रि के दूसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी की पूजा होती है। ब्रह्म का अर्थ है तपस्या व चारिणी का अर्थ है आचरण करने वाली देवी। मां के हाथों में अक्ष माला और कमंडल होता है। मां ब्रह्मचारिणी के पूजन से ज्ञान सदाचार लगन, एकाग्रता और संयम रखने की शक्ति प्राप्त होती है और व्यक्ति अपने कर्तव्य पथ से भटकता नहीं है। मां ब्रह्मचारिणी की भक्ति से लंबी आयु का वरदान प्राप्त होता है। मां ब्रह्मचारिणी की पूजा में मां को फूल, अक्षत, रोली, चंदन आदि अर्पण करें। उन्हें दूध, दही, घृत, मधु व शर्करा से स्नान कराएं और इसके देवी को पिस्ते से बनी मिठाई का भोग लगाएं। इसके बाद पान, सुपारी, लौंग अर्पित करें। कहा जाता है कि मां पूजा करने वाले भक्त जीवन में सदा शांत चित्त और प्रसन्न रहते हैं। उन्हें किसी प्रकार का भय नहीं सताता।

- बाल मुकुन्द ओझा

कोरोना महामारी पर लॉक डाउन प्रशंसनीय पर दूकानों की भीड़ बड़ा सवाल

कोरोना वायरस यकीनन एक वैश्विक महामारी है लेकिन 21 वीं सदी में समूची दुनिया के लिए शायद ही इससे बड़ा संक्रमण काल पहले कभी आया हो दुनिया भर के लिए नाजुक दौर में जरुरत है धैर्य और संयम कीण् यह भी सच है कि पहले से ही मंदी झेल रही वैश्विक अर्थ व्यवस्था को और भी ज्यादा चोट मिलने वाली हैण् वहीं विश्व स्वास्थ्य संगठन की मानें तो यह महामारी दुनिया के 186 देशों को अपनी चपेट में ले चुकी है जिसका सीधा मतलब यह हुआ कि पृथ्वी का कोई भी हिस्सा इससे अधूता नहीं है दुनिया भर में हर रोज कोरोना मरीजों की संख्या में तेजी से वृध्दि हो रही हैण् प्रभावितों और मौत के आंकड़े मिनट दर मिनट बढ़ रहे हैंण् इसी बुधवार दोपहर तक मोटे तौर पर करीब साढ़े चार लाख से ज्यादा लोग इस वायरस की जद में आ चुके थे वहीं मरने वालों की संख्या 22 हजार के पास पहुँच चुकी हैण् भारत में भी मरीजों की तादाद बढ़ रही है व मृत्यु का आंकड़ा भी खिसक रहा है।

वायरस का कहर कब थमेगा किसी को नहीं पता लेकिन बड़ी चिन्ता यह है कि इसका प्रभाव कब तक रहेगा मेडिकल साइंस के पास भी इसका सटीक जवाब नहीं है दावा जरुर किया जा रहा है कि करीब एक लाख लोग ठीक भी हो चुके हैं लेकिन वहीं कुछ आंकड़े बेहद डराने वाले हैं क्योंकि कोरोना वायरस की बीमारी से ठीक हुए लोग दोबारा इस संक्रमण के शिकार में आ रहे हैं यह स्थिति वाकई बेहद चिन्ताजनक और खतरनाक है शायद मेडिकल साइंस भी किंकतर्वव्यिमूढ़ वाली स्थिति में है पहले यह मान कर चला जा रहा था कि एक बार कोरोना वायरस जैसे संक्रमण के बाद इलाज से उस मरीज के शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ जाती है जिसके कारण दोबारा यह वायरस अटैक नहीं कर पाता है लेकिन जापानी मीडिया के खुलासे के बाद चिन्ता बहुत बढ़ गई है क्योंकि कई ऐसे मामले भी सामने आए हैं जिसमें कोविड 19 से पीड़ित जो पूरी तरह से ठीक होकर घर गए थे और सार्वजनिक जगहों पर जाने व परिवहन का उपयोग के बाद फ़िर से इसका शिकार हो गए इसके बाद अब यह नई मुसीबत अलग खड़ी हो गई क्योंकि यह माना जा रहा था कि मरीज एक बार ठीक हो जाने के बाद दोबारा इसका शिकार नहीं होगा लेकिन यह भ्रम टूट गया और कुछ ही हफ्तों में ऐसी घटनाएं सामने आने लगीं जिसने चिकित्सा शोधार्थियों का ध्यान ही भटका दिया अभी इसकी दवाओं को लेकर पूरी तरह से कोई सफ़लता मिलती कि दोबारा वायरस का संक्रमण एक ही व्यक्ति पर होने की घटना ने निश्चित रूप से मायूस किया हैण्

स्पेनिश नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी (सीएसआईसीद्ध में वायरस पर शोधकर्ता लुई एखुआनेस के सामने कम से कम 14 प्रतिशत ऐसे मामले हैं जिनमें पहले कोरोना वायरस से ठीक हुए लोगों में बीमार होने पर टेस्ट दोबारा पॉजिटिव्ह पाया गयाण् लुई एखुआनेस का मानना है कि वास्तव में ऐसा लगता है कि संक्रमण दोबारा तो नहीं हुआ लेकिन पूरी तरह से जिसे हम अमूमन जड़ से खत्म होना कहते हैं खत्म नहीं हुए वायरस शरीर में खुद को बढ़ाता रहा और दोबारा सामने आ गया चिकित्सा विज्ञान की भाषा में इसे बाउन्सिंग बैक कहते हैंण् ऐसा इसलिए भी होता है कि कई बार शरीर के ऐसे टीण् में कुछ वायरस छिपे रह जाते हैं जहां शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति का असर कम पहुंचता है इसलिए ये बाउन्सिंग बैक करते हैंण् इनका मानना है कि व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक ताकत कोरोना वायरस से हर वक्त लड़ने को तैयार नहीं होती जिस कारण जैसे ही इंसान की रोग प्रतिरोधक क्षमका थोड़ी भी कम हुई नहीं कि शरीर में पहले ही मौजूद वायरस उस पर हमला कर देता है।

वहीं कोरोना वायरस को तापमान बढ़ने के साथ असरहीन होने के दावे को लेकर भी वैज्ञानिकों की अलग.अलग सोच है कुछ का मानना है कि यह 60 से 70 डिग्री सेल्सियस के तापमान तक नष्ट नहीं हो सकता वहीं यह भी सामने है कि 2002 में नवंबर में सार्स महामारी शुरू हुई थी जो जुलाई में खत्म हो गई थी लेकिन इस बात के कोई पुख्ता सबूत भी नहीं है कि यह वायरस तापमान बढ़ने के चलते ही खत्म हुआ था वहीं कुछ का मानना है कि चूंकि गर्मी में थूक या छींक की लगभग अदृश्य सी छोटीं बूंदे जल्दी सूख कर चिपकी रह जाती हैं इसलिए वायरस भी आगे नहीं बढ़ पाता है और दम तोड़ देता हैण् अब कोरोना वायरस पर गर्मी का क्या असर होगाए अभी कह पाना मुश्किल हैण् इसका मतलब यह हुआ कि तेजगर्मी इंतजार केवल एक मौका ही हैण्

कोरोना के विश्वव्यापी संक्रमण के बीच यह भी हकीकत है कि फ़िलाहाल नए कोरोना यानी कोविड 19 वायरस की ना कोई पुख्ता दवा ही है और न अब तक किसी भी प्रकार के टीके का ईजाद हो पाया है कुछ देशों में इस पर तैयार की जाने वाली दवाओं का प्रयोग जरुर चूहों में किया जा रहा है जबकि अमेरिका ने इंसानों पर प्रयोग किया है लेकिन सार्वजनिक तर पर दवा अभी भी दूर है इसके अलावा जापान इटली स्पेन सिंगापुर भारत सहित कई देश अपने स्तर पर रात.दिन दवा की शोध में जुटे हुए हैं लेकिन उससे भी बड़ी हकीकत यह है कि इसमें वक्त लगेगा जिसके नतीजे जुन के आसपास मिल पाएंगे इसका मतलब यह हुआ कि अभी कम से 60 से 90 दिन और लग सकते हैं जब इसकी सर्वमान्य और सर्व स्वीकार्य दवा दुनिया के सामने हो वहीं यह भी नहीं भूलना चाहिए कि अभी कोरोना की जद में ग्रीनलैंड जैसे ठंडे देश तो दुबई जैसा गर्म शहर तो है ही वहीं दिल्ली जैसे सूखे शहर तो मुंबई जैसे आर्द्रता वाला शहर भी है ऐसे में भविष्य में क्या होगा इसका इंतजार करना होगा।

कोरना महामारी को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 21 दिन अर्थात 14 अप्रेल तक का लॉकडाउन की लक्ष्ण रेखा खींच एक तरह से अघोषित कर्फ़्यू का लिया गया फैसला व्यवहारिक तौर पर सही और कारगर नजर आ रहा है लेकिन इसको लेकर पूरे देश में जिस तरह का माहौल बना है वह बेहद चिन्ताजनक है कोविड 19 के फैलने की मुख्य वजह छुआछूत है और केवल इसीलिए पूरे देश को लॉकडाउन किया गया है हालांकि जरुरी वस्तुओं की बिक्री पर छूट तो है लेकिन दूकानों पर जमा हो रही भीड़ की जिनती तस्वीरें पहले दिन देश के सामने आईं वो हैरान करती हैं ऐसा लगता है कि इसको लेकर कोई साफ दिशा निर्देश न होने से हर कहीं अपने.अपने तरीके से लॉकडाउन का पालन कराया जा रहा है कई जगह जरुरी सामानों की बिक्री की कुछ घण्टे की छूट के दौरान जमा होने वाली भीड़ बेहद चिन्ताजनक है सवाल यही है कि संक्रमण रोकने खातिर भीड़ भाड़ से बचने व परस्पर दूरी बनाए रखने के लिए ही लॉकडाउन रखा गया है ऐसे में छूट के दौरान होने वाली भारी भीड़ ही इसका उलंघन है तो बचाव कैसे सुनिश्चित होगा क्या छुआछूत से फैलने वाला कोरोना चंद घण्टे खुलने वाली दूकानों में होने वाली भारी भीड़ से नहीं फैलेगा क्या दूकानदार और ग्राहक इससे अछूता रहेंगे और उससे भी बड़ी बात यह कि क्या कोरोना संक्रमण को पता है कि छूट के दौरान उसे इंसानों पर आक्रमण नहीं करना है कुल मिलाकर प्रधानमंत्री की पहल बेहद सराहनीय है लेकिन देश भर में तमाम जगह स्थानीय प्रशासन कैसे इस बात से बेखबर है कि लॉकडाउन का मकसद ही भीड़ रोकना है बढ़ाना नहीं यही समस्या गंभीर है और इससे तत्काल निपटना चुनौती है फ़िर निपटना तो होगा।

-.ऋतुपर्ण दवे
(दे लेखक के अपने विचार हैं)

27 मार्च विश्व रंगमंच दिवस पर विशेष

स्थितियों की पहचान और पड़ताल करने में सहायक हैरंगकर्म

हम आज जिस दौर से गुज़रते जा रहे हैं उसे अन्तर सांस्कृतिक दौर का नाम दिया जाने लगा है। समग्र-कलाओं के लिए विलिष्ट समय मानने वाले इसे थियेट्रिकल आर्ट के निज-अस्तित्व के विलुप्ति-काल की शुरुआत परिभाषित करने लगे हैं....

मेरा मानना है कि थियेटर कलारूप की तरह अकेला कभी नहीं रहा, लिहाजा न तो यह डायनासॉर की तरह है और न वूली मैमथ की तरह जिसके विलुप्त होने की आशंका जताई जाए..... हाँ, लगातार सक्रिय ज़रूर रहना होगा- खासकर हिन्दी रंगमंच को.....अव्यावसायिक और शौकिया टोलियों को.....

लगातार सक्रिय रहना और इस क्रिया को उत्प्रेरित-प्रेरित करने का काम संचालनालय- संस्कृति एवं पुरातत्व, संस्कृति विभाग, छ0ग0 शासन गत वर्षों से करता आ रहा था। **सफ़र मुक्ताकांश** एक ऐसा अभीनव प्रयोग था। जो राज्य के रंग टोलियों को अपनी प्रस्तुति देने के लिए एक निश्चित समय चक्र के तहत् अवसर देता था। साथ ही स्थानीय प्रशासक द्वारा स्थानीय नाट्य दलों को चित्रकोट महोत्सव बस्तर लोक महोत्सव और फ़गुन मड़ई दंतेवाड़ा जैसे उत्सवों में

प्रस्तुति के लिए मंच उपलब्ध करवाना उनके सांस्कृतिक रचनात्मकता को दर्शाता है। हमारे जैसे रंग कर्मियों के लिए यह गौरव की बात है कि हम सांस्कृतिक कर्म के द्वारा संस्कृति संवर्धन और संरक्षण की कोशिश कर रहे हैं। इसी कोशिश में मेरा मानना है कि शासन के द्वारा एक बहुउद्देशीय प्रेक्षागृह हर जिले के मुख्यालय में स्थापित किया जाये जिससे रंग टोलियों को वर्षभर एक आकाश एक जमीन और पुख्ता तरीके से मिले जहाँ खड़े रहकर संस्कृति कर्मी रंग विरासत को गतिशील बनाते हुए अगली पीढ़ी को हस्तांरित कर सके नाट्य विद्या को।

स्थानीय उत्सवों में यह अभिनव प्रयोग से **अभियान** जगदलपुर को जो उर्जा मिल रही है वह दल के कलाकारों के वर्ष भर सक्रिय बने रहने को हम स्पष्ट महसूस कर रहे है।

हर रंगकर्मी की तरह मेरे भी सरोकार हैं-अपने परिवेश से, लोगों से, लोगों पर पड़ रहे आस-पास के प्रभावों से, और कुल जमा माननीय संबंधों पर पड़ रहे असर को नाटक के माध्यम से उजागर करने से.....।

मेरी आँखों के लिए नाटक एक ‘लैंस’ की तरह है और मुझे पता है कि इस लैंस से दर्शक भी साफ-साफ चीजों को देख पाते हैं, आर-पार! जब हम ढंग से देख पाते हैं तो समाज की दशा-दिशा, भाषा-परिभाषा सब कुछ सटीक समझ में आने भी लगती हैं। और यह सब सार्थक बदलाव के रास्ते एक कमद उठाने जैसा तो है ही।

एक्टिविस्ट का बाना न पहनते हुए: नाटक माध्यम से स्थितियों की पहचान और पड़ताल करने में रंगकर्म मदद करे तो क्या इसे कम करके आंका जाएगा ?

जमीनी हकीकत से पलायन न हो इसके लिए भी जरुरी है कि थियेटर हों- नाटक-हों-खुब हों.....

- सत्यजीत भट्टाचार्य
रंग निर्देशक
अभियान, जगदलपुर